७. स्वराज्य मेरा जन्मसिद्‌ध अधिकार है

–लोकमान्य बाळ गंगाधर टिळक

परिचय

जन्म : १८५६, दापोली, रत्नागिरि (महाराष्ट्र)
मृत्यु : १९२०, मुंबई (महाराष्ट्र)
परिचय : बाळ गंगाधर टिळक जी एक शिक्षक, सामाजिक कार्यकर्ता एवं प्रसिद्‌ध वकील थे । आप देश के पहले ऐसे स्वतंत्रता सेनानी रहे , जिन्होंने पूर्ण स्वराज की माँग करके अंग्रेजों के मन में खौफ पैदा कर दिया था । जनसमाज ने आपको 'लोकमान्य' की उपाधि दी ।
प्रमुख कृतियाँ : 'गीता रहस्य', 'वेदकाल का निर्णय', आर्यों का मूल निवास स्थान', 'वेदों का काल निर्णय और वेदांग ज्योतिष' आदि।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत भाषण में टिळक जी ने 'स्वराज्य के अधिकार' को आत्मा की तरह अजर-अमर बताया है । यहाँ टिळक जी ने राजनीति, धर्म, स्वशासन आदि का विस्तृत विवेचन किया है। प्रस्तुत पाठ से स्वराज्य के प्रति टिळक जी की अटूट प्रतिबद्‌धता दिखाई पड़ती है ।

मौलिक सृजन

टिळक जी द्‌वारा संपादित/प्रकाशित 'केसरी' समाचार पत्र की जानकारी संक्षेप में लिखो ।

मैं यद्‌यपि शरीर से बूढ़ा, किंतु उत्साह में जवान हूँ । मैं युवावस्था के इस विशेषाधिकार को छोड़ना नहीं चाहता । अपनी विचार शक्ति को सबल बनाने से इनकार करना, यह स्वीकार करने के समान होगा कि मुझे इस प्रस्ताव पर बोलने का कोई अधिकार नहीं है ।

अब मैं जो कुछ बोलने जा रहा हूँ, वह चिर युवा है । शरीर बूढ़ा-जर्जर हो सकता है और नष्ट भी हो सकता है, परंतु आत्मा अमर है । उसी प्रकार, हमारी होमरूल गतिविधियों में भले ही सुस्ती दिखाई दे, उसके पीछे छिपी भावना अमर एवं अविनाशी है । वही हमें स्वतंत्रता दिलाएगी । आत्मा ही परमात्मा है और मन को तब तक शांति नहीं मिलेगी, जब तक वह ईश्वर से एकाकार न हो जाए। स्वराज्य मेरा जन्मसिद्‌ध अधिकार है । जब तक वह मेरे भीतर जाग्रत है, मैं बूढ़ा नहीं हूँ । कोई हथियार इस भावना को काट नहीं सकता, कोई आग इसे जला नहीं सकती, कोई जल इसे भिगो नहीं सकता, कोई हवा इसे सुखा नहीं सकती ।

मैं उससे भी आगे बढ़कर कहूँगा कि कोई सी.आई.डी. पुलिस इसे पकड़ नहीं सकती । मैं इसी सिद्‌धांत की घोषणा पुलिस अधीक्षक, जो मेरे सामने बैठे हैं, के सामने भी करता हूँ, कलेक्टर के सामने भी, जिन्हें इस सभा में आमंत्रित किया गया था और आशुलिपि लेखक, जो हमारे भाषणों के नोट्स लेने में व्यस्त हैं, के सामने भी । हम स्वशासन चाहते हैं और हमें मिलना ही चाहिए । जिस विज्ञान की परिणति स्वशासन में होती है, वही राजनीति विज्ञान है, न कि वह, जिसकी परिणति दासता में हो । राजनीति का विज्ञान इस देश के 'वेद' हैं ।

आपके पास एक आत्मा है और मैं केवल उसे जगाना चाहता हूँ । मैं उस परदे को हटा देना चाहता हूँ, जिसे अज्ञानी, कुचक्री और स्वार्थी लोगों ने आपकी आँखों पर डाल दिया है । राजनीति के,

विज्ञान के दो भाग हैं-पहला दैवी और दूसरा राक्षसी । एक राष्ट्र की दासता दूसरे भाग में आती है । राजनीति-विज्ञान के राक्षसी भाग का कोई नैतिक औचित्य नहीं हो सकता । एक राष्ट्र जो उसे उचित ठहराता है, ईश्वर की दृष्टि में पाप का भागी है ।

कुछ लोगों में उस बात को बताने का साहस होता है, जो उनके लिए हानिकारक है और कुछ लोगों में यह साहस नहीं होता । लोगों को इस सिद्‌धांत के ज्ञान से अवगत कराना चाहता हूँ कि राजनीति और धर्म, शिक्षा का एक अंग हैं । धार्मिक और राजनीतिक शिक्षाएँ भिन्न नहीं हैं, यद्‌यपि विदेशी शासन के कारण वे ऐसे प्रतीत होती हैं । राजनीति के विज्ञान में सभी दर्शन समाए हैं ।

इंग्लैंड भारत की सहायता से बेल्जियम जैसे छोटे से देश को संरक्षण देने का प्रयास कर रहा है, फिर वह कैसे कह सकता है कि हमें स्वशासन नहीं मिलना चाहिए ? जो हममें दोष देखते हैं, वे लोभी प्रकृति के लोग हैं परंतु ऐसे भी लोग हैं, जो परम कृपालु ईश्वर में भी दोष देखते हैं । हमें किसी बात की परवाह किए बिना अपने राष्ट्र की आत्मा की रक्षा करने के लिए कठोर प्रयास करने चाहिए । अपने उस जन्मसिद्‌ध अधिकार की रक्षा में ही हमारे देश का हित छिपा हुआ है । कांग्रेस ने स्वशासन का यह प्रस्ताव पास कर दिया है ।

प्रांतीय सम्मेलन कांग्रेस की ही देन है, जो उसके आदेशों का पालन करता है । इस प्रस्ताव को लागू कराने हेतु कार्य करने के लिए हम कृतसंकल्प हैं, चाहे ऐसे प्रयास हमें मरुभूमि में ही ले जाएँ, चाहे हमें अज्ञातवास में रहना पड़े, चाहे हमें कितने ही कष्ट उठाने पड़ें या अंत में चाहे जान ही गँवानी पड़े । श्रीरामचंद्र ने ऐसा किया था । उस प्रस्ताव को केवल तालियाँ बजाकर पास न कराएँ, बल्कि इस प्रतिज्ञा के साथ कराएँ कि आप उसके लिए काम करेंगे । हम सभी संभव संवैधानिक और विधिसम्मत तरीकों से स्वशासन की प्राप्ति के लिए कार्य करेंगे ।

जॉर्ज ने खुलकर स्वीकार किया है कि भारत के सहयोग के बिना इंग्लैंड अब चल नहीं सकता है । पाँच हजार वर्ष पुराने एक राष्ट्र के बारे में सारी धारणाएँ बदलनी होंगी । फ्रांसीसी रणभूमि में भारतीय सैनिकों ने ब्रिटिश सैनिकों की जान बचाकर अपनी बहादुरी का परिचय दिया है । हमें उन्हें बता देना चाहिए कि हम तीस करोड़ भारतीय साम्राज्य के लिए अपनी जान भी देने को तैयार हैं ।

—०—

श्रवणीय

राष्ट्रीय त्योहारों पर आयोजित कार्यक्रम में वक्ताओं द्‌वारा दिए गए वक्तव्य सुनो और मुख्य मुद्‌दे सुनाओ ।

संभाषणीय

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रसिद्‌ध घोषवाक्यों की सूची बनाकर उनपर गुट में चर्चा करो ।

लेखनीय

राष्ट्रप्रेम की भावना से ओत-प्रोत चार पंक्तियों की कविता लिखो ।

पठनीय

सुभद्राकुमारी चौहान की 'झाँसी की रानी' कविता पढ़ो ।

शब्द वाटिका

जर्जर = कमजोर
होमरूल = एक ऐतिहासिक आंदोलन
आशुलिपि = संकेत लिपि (शॉर्टहैंड)
नैतिक = नीति संबंधी
औचित्य = उपयुक्तता, उचित होने की अवस्था
कृतसंकल्प = जिसने पक्का संकल्प किया हो
मरुभूमि = बंजर भूमि, अनुपजाऊ भूमि
संवैधानिक = संविधान के अनुसार
अवगत कराना = परिचित कराना या बताना

मुहावरा

आँखों से परदा हटाना = वास्तविकता से अवगत कराना

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) विधानों को पढ़कर गलत विधानों को सही करके लिखो :

१. टिळक जी ने कहा है कि, वे यद्‌यपि शरीर से जवान है किंतु उत्साह में बूढ़े हैं ।
२. प्रांतीय सम्मेलन अंग्रेजों की देन है ।

(२) टिप्पणी लिखो :

१. लोकमान्य टिळक
२. होमरूल

(३) उत्तर लिखो :

१. लोकमान्य टिळक जी द्‌वारा दिया गया नारा :

____

(४) कृति पूर्ण करो :

जन्मसिद्‌ध अधिकार की विशेषताएँ

१. __________
२. __________
३. __________
४. __________

भाषा बिंदु पाँच-पाँच सहायक और प्रेरणार्थक क्रियाओं का अपने स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग करो ।

उपयोजित लेखन अपने विद्‌यालय में आयोजित 'स्वच्छता अभियान' का वृत्तांत लिखो । वृत्तांत में स्थल, काल, घटना का उल्लेख आवश्यक है ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन पाठ में प्रयुक्त उद्‌धरण, सुवचन, मुहावरे, कहावतें, आलंकारिक शब्द आदि की सूची बनाकर अपने लेखन प्रयोग हेतु संकलन करो ।

J1IW1L